BANM– 161 भौतिक/जैविक मानवविज्ञान के आयाम

अनुशिक्षक चिंहित सत्रीय–कार्य (TMA)

कोर्स कोडः BANM 161

असाइनमेंट कोडः BANM–161/ASST/TMA/ जुलाई 2026– जनवरी 2027

कुल अंकः 100

सत्रीय–कार्य में दो अनुभाग हैं। आपको सभी अनुभागों में सभी प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।

सत्रीय कार्य – I

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दें। **2X 20= 40**

क. जैविक मानवविज्ञान को परिभाषित कीजिए। जैविक मानवविज्ञान के अनुप्रयोगों पर चर्चा कीजिए।

ख. जैविक उद्विकास (Organic Evolution) के किन्हीं दो सिद्धांतों की व्याख्या कीजिए।

सत्रीय कार्य – II

2. निम्नलिखित पर लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए । **3X10=30**

क. फ्राँस्वा बार्नियर के अनुसार इंसानों के नस्लीकरण (racialisation) का वर्णन करें।

ख. DNA स्तर पर पॉलीमॉर्फिज्म (बहुरूपता)।

ग. विकासवाद के उत्परिवर्तन (म्यूटेशन) सिद्धांत पर चर्चा करें।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में दें। **6X5=30**

क. अर्जित लक्षणों की वंशागति

ख.. प्राइमेट विशेषताएँ

ग. विलुप्ति

घ. निग्रोइड समूह

इ. गिब्बन की आकारिकीय और शारीरिक संरचना संबंधी विशेषताएँ

च. नस्ल और नस्लवाद

---

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दें। (2 × 20 = 40)

क. जैविक मानवविज्ञान को परिभाषित कीजिए। जैविक मानवविज्ञान के अनुप्रयोगों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर

जैविक मानवविज्ञान मानवविज्ञान की वह शाखा है जो मनुष्य को एक जैविक प्राणी के रूप में समझती है। इसमें मानव जाति की उत्पत्ति, उद्विकास, आनुवंशिकता, शरीर की संरचना, जैविक विविधता और पर्यावरण के प्रति अनुकूलन का अध्ययन किया जाता है। यह शाखा जीवविज्ञान, आनुवंशिकी, शरीररचना विज्ञान, पुराजीवविज्ञान और पुरातत्त्व के निष्कर्षों को जोड़कर बताती है कि आज का मनुष्य किस प्रकार विकसित हुआ। जैविक मानवविज्ञानी केवल हड्डियों या शारीरिक मापों को नहीं देखते, बल्कि मानव शरीर और सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों के संबंध को भी समझते हैं।

अध्ययन के प्रमुख क्षेत्र

मानव उद्विकास में प्राचीन मानवों के जीवाश्मों, उनके दाँतों, खोपड़ी, अस्थियों और उपकरणों का अध्ययन करके मानव वंशक्रम की जानकारी प्राप्त की जाती है। प्राइमेट अध्ययन के अंतर्गत बंदरों, कपियों तथा मनुष्यों की समानताओं और भिन्नताओं की तुलना होती है। मानव